!! ओ३म् !!

INCLUSIVE AND QUALITY EDUCATION : CHALLENGES AND ISSUES

समावेशी और गुणात्मक शिक्षा : चुनौतियाँ और मुद्दे

मुख्य सम्पादक :

डॉ. राजेन्द्र कुमार गोदारा

सम्पादिका :

डॉ. रेखा सोनी

सम्पादक :

डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

समावेशी और गुणात्मक शिक्षा : चुनौतियाँ और मुद्दे

Inclusive and Quality Education : Challenges and Issues

ISBN - 978-81-936150-4-1

Published by :

Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

202, Old Housing Board,

Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA

Email : ginapk222@gmail.com

Website : www.grngo.org

WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price : 501/-

Printed by : **Manbhawan Printers**, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

28.	समावेशी शिक्षा की आवश्यकता और महत्व	जिज्ञासू	82-
29.	सुविधा वंचित वर्ग अल्पसंख्यक व अन्य पिछड़ा वर्ग में शिक्षा	डा. नीलम आर्या	87-
30.	समावेशी बच्चों हेतु निर्देशन एवं परामर्श	डॉ. राजेश शर्मा	92-
31.	उच्च शिक्षा में गुणवत्ता मूल्यांकन : भारत में उच्च शिक्षा का स्तर	भारती बहेन बचेटा	96-
32.	कला एवं शिल्प–पाठ्यक्रमों में समावेश द्वारा व्यक्तित्व विकास	डॉ. भावना उपाध्याय	
33.	समावेशी शिक्षा की आवश्यकता और महत्व	डॉ. सतीश कुमार	98-
34.	समावेशी शिक्षा का महत्व एवं आवश्यकता	शक्ति साहू	99-
35.	Teaching English writing skills to the Hearing Impaired: A Study in India	Bhavna Bajarh	101-
36.	उच्च शिक्षा में अभिगम्यता, गुणवत्ता व रोजगार बनाम नकल की व्यवस्था	डॉ० ज्योति सिंह	106-
37.	LIFE SKILL EDUCATION	Tanu Pahuja	108-
38.	समावेशी शिक्षा : प्रचलन एवं चुनौतियाँ	डॉ. गिरधारीलाल शर्मा	110-
39.	विकलांगों को प्राप्त शिक्षा का कानूनी अधिकार (विकलांग कानून 1995 के संदर्भ में)	डॉ. नरेश सिहाग	114-
40.	समावेशी शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्त्व	संजू	116-
41.	उच्च शिक्षा और जीवन कौशल	डॉ.पंडित बन्ने	119-
42.	Inclusive Education : Policies & Programs	Dr. Sangeeta Aggarwal	121-
43.	आयुर्वेदिक वाड्.मय में अनुस्यूत योग शिक्षा	डॉ0 पूनम	123–
44.	उच्च शिक्षा में अभिगम्यता व गुणवत्ता	महावीर प्रसाद	129–
45.	समाज में शिक्षा से वंचित लोगों को शिक्षा से किस प्रकार जोड़ा जाए	सुमन बाला	131–
46.	राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण शिक्षा में जागरुकता	पूजा बाई	134–
47.	वर्तमान में समावेशी शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्व का अध्ययन	रंजना जैन	136–
48.	NEEDS AND IMPORTANCE OF ENCLUSIVE EDUCATION	Mr. Rajinder Kumar	137-1
49.	समावेशी शिक्षा एक परिचय	सुमन रानी	141–
50.	सम्पूर्ण गुणवत्तापूर्ण प्रबन्धन (TQM) में प्रधानाचार्यों के नेतृत्व की भूमिका	रितु सिंह महियारिया	143–1
51.	समावेशी शिक्षा एवं विद्यालय	अल्पना शर्मा	146–1
52.	समावेशी शिक्षा : उद्देश्य चुनौती एवं समाधान	डॉ0 नीलम देवी	149–1

 ISBN : 978-81-936150-4-

समावेशी और गुणात्मक शिक्षा : चुनौतियाँ और मुद्दे
Inclusive and Quality Education : Challenges and Issues

समावेशी शिक्षा : प्रचलन एवं चुनौतियाँ

सारांश.समावेशी शिक्षा कक्षामें विविधता की मनोवृत्ति को स्वीकार करने की मनोवृत्ति है, जिसके अन्तर्गत विविध क्षमताओं वाले बालक सामान्य शिक्षा प्रणाली में एक साथ अध्ययन करते है। भारतीय संविधान में समता, स्वतंत्रता सामाजिक न्याय एवं व्यक्ति की गरिमा को प्राप्य मूल्यों के रूप में निरूपित किया गया है, जिसका इशारा समावेशी शिक्षा की तरफ ही है। राष्ट्रीय तथा राज्य स्तर पर समावेशी शिक्षा के प्रसार के प्रयास निरन्तर किये जा रहे हैं। मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा जारी वार्शिक रिपोर्ट 2015.16 के अनुसार अनुसूचित जाति, जनजातिए मुस्लिम तथा निःशक्त बच्चों के लिए शिक्षा की उपलब्धता में सुधार हुआ है। इतने वर्षो से इतने प्रयासों के बाद भी हम पूर्ण समावेशन के लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाये हैं। अनेक दिव्यांग बच्चे, पिछड़े तथा वंचित वर्ग के बच्चे शिक्षा की मुख्य धारा से वंचित हैं। इसका प्रमुख कारण वे चुनौतियां हैं, जो समावेशी शिक्षा के क्षेत्र में आज भी विद्यमान हैं। समावेशी शिक्षा की दो प्रमुख संस्थाए है – परिवार तथा शिक्षण–प्रशिक्षण संस्थान। समावेशी शिक्षा के क्षेत्र में पारिवारिक स्तर पर. लिंग भेद भाव एशारीरिक मानसिक चुनौती वालों के प्रति दृष्टिकोंणए सामाजिक–आर्थिक वंचित वर्ग के प्रति नजरियाए अतिसंरक्षण एवं अस्वीकरण यशैक्षिक संस्थानों के स्तर पर दृप्रशिक्षित शिक्षकों का अभावए भौतिक संसाधनों की कमीए अनपयुक्त पाठ्यचर्याए दोषपूर्ण प्रवेश नीतिए विशिष्ट बच्चों के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोणय प्रशासनिक स्तर पर. प्रशासनिक भ्रष्टाचारए योजनाओं का उचित क्रियान्वयन न होना आदि अनेक चुनौतियां है । इस प्रकार हम देख रहे कि समावेशी शिक्षा वर्तमान में अनेक चुनौतियां से जूझ रही है, जिनका समाधान किये बिना समावेशन के लक्ष्य को प्राप्त नहीं किया जा सकता है। अतः आज आवश्यकता है कि हम पारिवारिक, शैक्षिक तथा प्रशासनिक स्तर पर ऐसे विशिष्ट उपाय अपनाएं जिससे समावेशी शिक्षा की चुनौतियों का समाधान हो सके तथा समावेशी समाज का विकास हो।

"Everyone is a genius, but if you judge a fish by its ability to climb a tree, it will live its whole life believing that it is stupid."..... Albert Einstein.

किसी भी राष्ट्र का सम्पूर्ण विकास, इसमें निवास करने वाले सम्पूर्ण लोगों की सम्पूर्ण भागीदारी तथा सम्पूर्ण समावेशन पर ही निर्भर करता है। इस कार्य हेतु देश में ऐसी शिक्षा व्यवस्था होनी चाहिये, जो समस्त नागरिकों में सामंजस्य स्थापित कर देश के विकास में उनकी भागीदारी सुनिश्चित कर सके। आज समावेशी शिक्षा ऐसी प्रणाली है जो इस उत्तरदायित्व को पूर्ण करने में समर्थ है।

हमारे देश में आज भी लाखों बच्चे ऐसे हैं, जो शिक्षा की मुख्य धारा से वंचित हैं, जिनमें एक बड़ा वर्ग दिव्यांग बच्चों का है, इसके साथ ही पिछड़े बच्चे, वंचित बच्चे, भाषायी, प्रजातीय, अल्पसंख्यक, अधिकारहीन आदि बच्चे इनमें शामिल हैं। प्रारम्भ में दिव्यांग बच्चों की शिक्षा की शुरूआत विशेश विद्यालयों से हुई, जिनका लाभ निःसन्देह इन बच्चों को हुआ, किन्तु सामान्य बच्चों से पृथक्करण ने इनमें हीनता की भावना को जन्म दिया, जो कि इनके विकास में बाधक बनने लगा। फलतः 'एकीकृत शिक्षा' को जन्म मिला। एकीकृत शिक्षा में भी बच्चों का पूर्ण समायोजन तथा सहभागिता सुनिश्चित न होने के कारण 'समावेशी शिक्षा' को अपनाया गया।

समावेशी शिक्षा से तात्पर्य ऐसी शिक्षा प्रणाली से है, जिसमें प्रत्येक बालक को, चाहे वे विशिष्ट हो या सामान्य, बिना किसी भेदभाव के एक साथ, एक ही विद्यालय में सभी आवश्यक तकनीकों एवं सामग्रियों के साथ उनकी सीखने–सिखाने की जरूरतों को पूरा किया जाये। समावेशी शिक्षा कक्षा में विविधता की मनोवृत्ति को स्वीकार करने की मनोवृत्ति है, जिसके अन्तर्गत विविध क्षमताओं वाले बालक सामान्य शिक्षा प्रणाली में एक साथ अध्ययन करते है।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के समावेषित शिक्षा स्कीम (2003) के अनुसार – "समावेशित शिक्षा से तात्पर्य सभी सीखने वाले, बिना विकलांग एवं विकलांग नवयुवक पूर्व विद्यालय प्रावधानों, विद्यालय और सामुदायिक शैक्षिक